9/11/2020
MONDAY

HINDI

STD - X
class - 19

Assignment

1) कवि ने अकाल का चित्रण किस प्रकार किया है ?

Ans) कवि ने अकाल का चित्रण चार बिंदुओं से किया है। अकाल के कारण चूल्हा रोया था अर्थात् कई दिनों तक चूल्हा जलाया नहीं गया, बुझा पड़ा रहा। चक्की उदास हो गई, क्योंकि घर में पीसने के लिए अनाज नहीं रहा। दाना पीसने वक्त चक्की खुश होती है। भूख से तड़पती छिपकलियाँ दीवार पर इधर-उधर टहलती रहीं। छिपकलियाँ कीड़े खाती हैं। कीड़े घर के दीये की रोशनी के पास आते हैं। लेकिन जिस घर में दाने नहीं हैं, वहाँ दीया कैसे जलेगा ? अकाल में भूख के कारण छिपकलियाँ भी परेशान थीं। चूहे भी बुरी हालत में थे। गाँव के किसी घर में दाने होते तो चूहे वहाँ चले जाते। लेकिन अकाल के कारण कहीं भी दाना नहीं था। अकाल के दिन दुःख और निराशा के दिन थे।

2) कवि ने अकाल के बाद की हालत का चित्रण किस प्रकार किया है ?

Ans) अकाल के बाद का चित्रण कवि ने कई बिंदुओं से किया है। कई दिनों के अकाल के बाद घर के अंदर दाने आए। चूल्हा जलने लगा और घर के ऊपर धुआँ उठने लगा। खाना बनाने की खुशी में सबकी आँखें चमक उठीं। बाकी भोजन और दाने लोग बाहर फेंकते वक्त कौए आकर खा लेते हैं। खाना बनाते वक्त कौए भी पंख खुजलाते नज़र आने लगे। अकाल के बाद सब के चेहरे पर खुशी थी।

3) दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
इन पंक्तियों से कवि क्या कहना चाहता है ?

Ans) कई दिनों के अकाल के बाद घर के भीतर दाने आए। तब चूल्हा जलाया गया और चिमनी से धुआँ उठने लगा। कई दिनों के बाद छप्पर के ऊपर धुआँ उठा। इसी प्रकार चूल्हा जलाना और धुआँ ऊपर उठना खुशी का संकेत है।

4) कविता की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें।

കവിതയുടെ പ്രസക്തിയെക്കുറിച്ച് കുറിപ്പെഴുതാം.

अकाल का दुःख और बाद की ख़ुशी

हिंदी के प्रसिद्ध कवि नागार्जुन की एक छोटी कविता है अकाल और उसके बाद। इसमें अकाल की परेशानियाँ और फिर आनेवाली ख़ुशियों का चित्रण है। अकाल के दिन कई दिनों तक चूल्हा रोया था क्योंकि घर में दाना नहीं था। चूल्हा बिना जलाए पड़ा था। चक्की भी उदास थी क्योंकि चक्की में पीसने के लिए दाना नहीं था। चूल्हा और चक्की के पास लेटी कानी कुतिया सो गई। चूल्हा जलने और खाना मिलने की प्रतीक्षा में वह वहाँ लेटी थी। छिपकलियाँ दीवार से इधर-उधर चलती थीं। उनका खाना दीये के आस-पास मंड़रानेवाले कीड़े थे। घर में दीया न जलाने के कारण उनको भी खाना न मिलता था। चूहे भी शिकस्त हालत में थे। अकाल के कारण खेतों में भी दाना नहीं था। फिर अकाल के बाद की ख़ुशी आयी। घर में दाने आए। घर के ऊपर धुआँ उठा। खाना बनाने की ख़ुशी में सबकी आँखें चमक उठीं। कई दिनों के बाद कौए ने अपने पंख खुजलाये। वे सब खाना चुगकर उड़ जाने की तैयारी में थे। कई दिन के अकाल के दुःख के बाद फिर सब के मन में ख़ुशी आयी। कई बिंबों और प्रतीकों से सजाकर कवि ने यह कविता लिखी है। इसकी प्रासंगिकता सार्वकालिक है, क्योंकि सुख और दुःख मानव-जीवन रूपी सिक्के के दो पहलू है।